दृष्टि The Vision

19 AUG 2019

drishti

ESSAY

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

DTVF/19(JS)–ESY-E4

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

Name: Rajesh Kumar Meena **Mobile Number:** _____

Medium (English/Hindi): Hindi **Reg. Number:** AWAKE-19/E024

Center & Date: Mukherjee Nagar, 18/8/19 **UPSC Roll No.** *(If allotted)*: 11/8307

प्रश्नपत्र संबंधी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबंध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू. सी. ए.) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएंगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहिये।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़े गए किसी पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

	निबंध विषय संख्या (Essay Topic No.)	अंक (Marks)
खंड-A Section-A		
खंड-B Section-B		
सकल योग (Grand Total)		

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

drishti | दृष्टि The Vision

खंड A और B में प्रत्येक से एक विषय चुनकर दो निबंध लिखिये, जो प्रत्येक लगभग 1000–1200 शब्दों का हो: $125 \times 2 = 250$

Write TWO Essays, choosing ONE from each of the Section A and B, in about 1000–1200 words each: $125 \times 2 = 250$

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

खंड–A / SECTION –A

1. सोशल मीडिया : सामाजिक कम व्यक्तिगत ज़्यादा।
   Social media : More personal than social.
2. भारत में सामाजिक सशक्तीकरण की प्रक्रिया में आरक्षण का योगदान तथा इसके विरोधाभास।
   The role of reservation in social empowerment in India: Contribution and Contradiction.
3. भूमंडलीकरण के दौर में संरक्षणवादी नीतियाँ अल्पकालिक हितों की पूर्ति से ज़्यादा कुछ नहीं है।
   Protectionist measures in the era of globalization are nothing more than the fulfilment of short-term interests.
4. जलवायु परिवर्तन : करे कोई भरे कोई।
   Climate Change : Done by someone and paid by someone else.

खंड–B / SECTION –B

1. एक सुखी जीवन प्रकृति से प्रेरित एवं सहजता से संचालित होता है।
   A good life is the one inspired by nature and conducted with ease.
2. व्यावहारिकता आदर्श की पुष्टि करती है।
   Pragmatism affirms the ideal.
3. मूल्यविहीन शिक्षा व्यक्ति को चतुर शैतान बनाती है।
   Education without values makes man a cleverer devil.
4. विकसित होते भारतीय समाज का द्वंद्व।
   Conflicts in developing Indian society.

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

खंड–A / SECTION –A

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

1. सोशल मीडिया : सामाजिक कम व्यक्तिगत ज़्यादा।

   Social media : More personal than social.

2. भारत में सामाजिक सशक्तीकरण की प्रक्रिया में आरक्षण का योगदान तथा इसके विरोधाभास।

   The role of reservation in social empowerment in India: Contribution and Contradiction.

3. भूमंडलीकरण के दौर में संरक्षणवादी नीतियाँ अल्पकालिक हितों की पूर्ति से ज़्यादा कुछ नहीं है।

   Protectionist measures in the era of globalization are nothing more than the fulfilment of short-term interests.

4. जलवायु परिवर्तन : करे कोई भरे कोई।

   Climate Change : Done by someone and paid by someone else.

जलवायु परिवर्तन : करे कोई भरे कोई

आज विश्व जिन गंभीर समस्याओं का सामना कर रहा है - उनमें जलवायु परिवर्तन की समस्या गंभीर विकराल रूप धारण कर मानव अस्तित्व के समक्ष चुनौती उत्पन्न कर रही है। इसके इन दुष्प्रभावों को देखकर वैश्विक समुदाय संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वाधान के अंतर्गत इसे सुलझाने के लिये प्रयत्नरत होता दिख रहा है।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

इस सामूहिक प्रयास में जलवायु परिवर्तन के लिए जिम्मेदार देशों के इस में विभिन्न देशों के मतभेद उभर कर सामने आ रहे हैं। इनमें एक तरफ विकसित देश हैं, जबकि दूसरी तरफ हैं- विकासशील एवं अल्पविकसित और पिछड़े देश। विकसित देश जहाँ इस समस्या के लिए केवल स्वयं को जिम्मेदार न मानकर वैश्विक रूप से सभी देशों को जिम्मेदार मानकर इसके समाधान के रूप में अपने विशिष्ट उत्तरदायित्वों से बचते हुए सभी देशों को समान रूप से प्रयासरत होने की बात करते हैं, वहीं विकासशील एवं पिछड़े देश इसके लिए विकसित देशों को ऐतिहासिक रूप में उत्तरदायी ठहराते हैं।

1972 के स्टॉकहोम सम्मेलन से लेकर पृथ्वी शिखर सम्मेलन एवं 2015 के पेरिस सम्मेलन यह मतभेद प्रमुख रूप से बना रहा है। इस संदर्भ में इन प्रश्नों पर गौर करना प्रासंगिक हो जाता है कि जलवायु परिवर्तन की समस्या पैदा कैसे हुई है? इसके पीछे क्या प्रमुख कारण रहे हैं?, क्या इन कारणों के लिए किसी विशेष देशों या समूहों को

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

जिम्मेदार ठहराया जा सकता है तथा इसके परिणाम इसरों को किस प्रकार भुगतने पड़ रहे हैं? क्या इसका समाधान इसके लिए जिम्मेदार समूहों / देशों को ही उठाना चाहिए या उनको भी जो इसके लिए जिम्मेदार नहीं हैं? इसके साथ ही अभी तक वैश्विक समुदाय द्वारा उठाये गये समग्र कदमों के आलोक में ही इस बिंदु को समझा जा सकता है- 'जलवायु परिवर्तन: करे कोई भरे कोई' सही है या गलत?

इस हम में हमें सर्वप्रथम यह समझना होगा कि जलवायु परिवर्तन आखिर है क्या? और यह विश्व के समक्ष गंभीर चिंता के रूप में उभर कर आ गयी है? दरअसल जलवायु किसी विशेष क्षेत्र के दीर्घावधि मौसम के औसत रूप को कहा जाता है जिसमें उस क्षेत्र के तापमान, वर्षा, आर्द्रता, वनस्पति आदि पर्यावरणीय दशाओं का निर्धारण होता है। ये प्राकृतिक दशाएँ समय के साथ परिवर्तित होती हैं, लेकिन इसकी दर

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

अत्यंत धीमी होती है। इस प्रकार जलवायु परिवर्तन एक स्वाभाविक प्रक्रिया है जिसके परिवर्तन में हजारों-लाखों वर्ष लग जाते हैं।

लेकिन वर्तमान समय में मानव समुदाय द्वारा प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन, हरित गृह गैसों के तीव्र दर से उत्सर्जन, वनोन्मूलन एवं पर्यावरण क्षरण के कारण भूमंडलीय ऊष्मण के कारण तापमान के औसत में तीव्र दर से वृद्धि होने के कारण जलवायु परिवर्तन की दर तीव्र हो गयी है। इसके कारण तापमान में वृद्धि से मौसम में परिवर्तन, ग्लेशियरों के पिघलने, समुद्री जल स्तर में वृद्धि, प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़, सूखा, चक्रवात, सूनामी, आदि की तीव्रता एवं आवृत्ति में वृद्धि होने से जन-धन की क्षति में वृद्धि हो रही है, तथा साथ में ये समस्याएँ आर्थिक एवं सामाजिक विकास के समक्ष बाधाएँ उत्पन्न कर रही हैं।

जब हम जलवायु परिवर्तन के लिए उत्तरदायी कारणों की पड़ताल करते हैं तो यह पाते हैं कि विश्व इतिहास में औद्योगिक क्रांति के,

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

वैज्ञानिक क्रांति एवं उपयोगितावादी प्रवृत्ति ने मानव को स्वकेन्द्रित बनाते हुए प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन को प्रोत्साहित किया। इसी क्रम में वर्तमान में विकसित देशों की श्रेणी में खड़े देशों ने कोयला एवं जीवाश्म ईंधनों का अत्यधिक उपयोग, तीव्र औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के कारण वृक्षों के कटाव एवं क्रंक्रीट के जंगल को बढ़ावा देने, वाहनों के अत्यधिक उपयोग के कारण हरित गृह गैसों का तीव्र उत्सर्जन आदि के द्वारा पर्यावरण प्रदूषण की दर को तीव्र करते हुए हरित गृह गैसों के अधिकाधिक उत्सर्जन के द्वारा जलवायु परिवर्तन की परिघटना को तीव्र कर दिया।

इन विकसित देशों ने औद्योगिक क्रांति के दौरान अपने उपनिवेशवादी हितों के मद्देनजर अपने गरीब एवं पिछड़े उपनिवेशों के प्राकृतिक संसाधनों का भी तीव्र गति से दोहन कर एक तरफ अपने विकास प्रक्रिया को तीव्र कर उपनिवेशों के विकास की गति को विकृत कर उन्हें गरीबी, भुखमरी

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

बेरोजगारी जैसी समस्याओं से दलदल में छोड़ दिया।

इन पश्चिमी एवं यूरोपीय देशों में बौद्धिक क्रांति के दौरान न्यूटन, डेकार्ट जैसे विचारकों ने प्रकृति को मनुष्य के अधीन बताकर उसके तीव्र दोहन को प्रोत्साहित किया और इसी का परिणाम यह रहा है ~~कि इसकी~~ कि औद्योगिक क्रांति के बाद 150-200 वर्षों में पृथ्वी के औसत तापमान में उतनी वृद्धि हो गयी, जितनी पिछले हजारों वर्षों में नहीं हुई थी।

इस प्रकार इस विश्लेषण से यह समझ में आता है कि जलवायु परिवर्तन, जो कि विकास के लिए प्रकृति के असंतुलित दोहन का परिणाम है, उसके लिए काफी हद तक इस विकास प्रक्रिया का लाभ उठा चुके इन विकसित देशों जैसे अमेरिका, पश्चिमी यूरोप आदि को ठहराया जा सकता है।

लेकिन, जब इस समस्या के कारण उत्पन्न चुनौतियों की बात की जाती है तो यह देखने में आ रहा है कि इस समस्या ने न केवल विकासशील एवं पिछड़े देशों को प्रभावित किया है,

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

बल्कि स्वयं इसके लिए प्रमुख रूप से उत्तरदायी विकसित देश भी इसके परिणाम भुगत रहे हैं। हो, यह बात जरूर है कि विकसित देशों की तुलना में विकासशील एवं अल्पविकसित देश संसाधनों एवं तकनीकों के अभाव के साथ विकास की प्रक्रिया में पिछड़े होने के कारण अपेक्षाकृत रूप से इसके ज्यादा परिणाम भुगत रहे हैं जो जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न समस्याओं के संदर्भ में देखा जा सकता है।

भूमंडलीय ऊष्मण एवं जलवायु परिवर्तन के कारण उत्पन्न समस्याओं में मौसमी जलवायु परिवर्तन ने स्थानीय जलवायु के प्रतिरूप में बदलाव किया जा रहा है जिसके मानसूनी कृषि पर आधारित क्षेत्रों में मानसून की अनिश्चितता के कारण कृषिगत उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। इसी के साथ अलनीनो जैसी गर्म जलधारा के कारण भी मानसूनी जलवायु पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

इसके साथ विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं में वृद्धि के कारण जन धन की गंभीर क्षति के साथ

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

विकास की प्रक्रिया बाधित होने के साथ विस्थापन के साथ पर्यावरणीय शरणार्थियों के समक्ष गंभीर समस्याएँ सामने आती है।

इसके साथ अम्लीय वर्षा; जल, वायु प्रदूषण के कारण स्थानीय मानव समुदाय के स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव के साथ प्राकृतिक आपदाओं के दौरान महामारी के रूप में स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ देखने को मिल रही है। इससे मानव विकास सूचकांक के संदर्भ में विभिन्न प्रभावित देशों की स्थिति में गिरावट होती है।

जलवायु परिवर्तन के कारण उत्पन्न खाद्यान्न संकट की समस्या से भुखमरी, कुपोषण के साथ आर्थिक गतिविधियों के बाधित होने से बेरोजगारी की समस्या भी गंभीर हो जाती है। इसके साथ ही पारिस्थितिकी असंतुलन के कारण जैव विविधता के ह्रास के साथ पारिस्थितिकी उत्पादकता में कमी आती है।

वर्तमान में हिमनदों के तेजी से पिघलने के कारण एक तरफ स्वच्छ जल के स्रोतों में

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

गिरावट आने वाली है, वहीं समुद्री जल स्तर में वृद्धि के कारण द्वीपीय एवं तटीय देशों के जलमग्न होने की समस्या भी मौजूद है और ज्यादातर द्वीपीय व देश छोटे एवं अविकासशील ही हैं।

जलवायु परिवर्तन के कारण उत्पन्न इन समस्याओं का सामना किसी न किसी रूप में विकसित एवं विकासशील देशों दोनों को करना पड़ता है, लेकिन पिछड़े देशों में विकसित देशों की तुलना में संसाधनों का अभाव, तकनीक का अभाव, सामाजिक एवं आर्थिक पिछड़ापन, संस्थाओं की कुशलता में कमी के कारण सुभेद्यता अधिक होने के कारण जलवायु परिवर्तन के कारण उत्पन्न प्राकृतिक प्रकोप जैसी आपदा का कारण बन ~~सकते~~ व्यापक क्षति का कारण बनती है।

इसी तरफ देखें तो जबकि विकसित देश विकास के उच्च स्तर पर पहुँच चुके हैं, वहीं अब विकासशील एवं अन्य पिछड़े देशों द्वारा विकास की गति को तीव्र करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों के दोहन भी करते हैं तो

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

ये विकसित देश अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर जलवायु परिवर्तन का मुद्दा उठाकर स्वच्छ ऊर्जा तकनीक एवं पर्यावरण प्रबंधन तकनीक आदि मुद्दों को उठाकर विकास की प्रक्रिया को बाधित करने की कोशिश करते हैं जो अमेरिका द्वारा भारत एवं चीन की लगातार आलोचना के क्रम में देखा जा सकता है जो कि कोयले के उपयोग एवं हरित गृह गैसों के उत्सर्जन को लेकर है।

इस प्रकार विकसित देशों की ऐतिहासिक गलती को विकासशील एवं पिछड़े देशों द्वारा इस प्राकृतिक आपदाओं के व्यापक प्रभाव एवं बाधित विकास की प्रक्रिया के रूप में भरना पड़ता है।

इसके साथ ही जब इस समस्या के समाधान की बात आती है 1992 के पृथ्वी शिखर सम्मेलन में यूएनएफसीसीसी के तत्वाधान में सभी ने सामूहिक रूप से इसके खिलाफ कदम उठाने की बात की है तथा साथ ही विकसित देशों को ऐतिहासिक रूप से जिम्मेदार मानते हुए

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

अतिरिक्त जिम्मेदारी के रूप में वित्तीयन, स्वच्छ प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण, हरित गृह गैसों के उत्सर्जन को कम करने के लक्ष्य आदि कर्त्तव्य निर्धारित किये गये हैं तथा भारत जैसे विकासशील देशों ने 'सामान्य लेकिन विभेदक उत्तरदायित्व के सिद्धांत के अंतर्गत' सामूहिक जिम्मेदारी के साथ विकसित देशों को इन विशिष्ट उत्तरदायित्वों को पूर्ण निर्वहन करने का मुद्दा उठाया है।

लेकिन विकसित देश इस संदर्भ में भी अपने दायित्वों के निर्वहन में पूर्ण रूप से खरे नहीं उतरते हैं और इसी के अगले कदम के रूप में विकासशील देशों पर जिम्मेदारी डालते हुए पेरिस सम्मेलन (2015) में आई.एन.डी.सी. के माध्यम से विकासशील देशों को भी जिम्मेदारी उठाने की बात की गयी है। इस संदर्भ में विकासशील देशों द्वारा 'कट कोई-भरे कोई' का मुद्दा उठाया जाता है तथा 'सामान्य लेकिन विभेदक उत्तरदायित्व', 'लॉस एवं डेमेज', द्वीपीय देशों के लिए विशेष सुरक्षा उपाय आदि के

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation
उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

माध्यम से विकसित देशों से अधिक जिम्मेदारी की अपेक्षा की जाती है जिसे क्योटो प्रोटोकॉल एवं तालानोआ संवाद एवं किगाली समझौते के क्रम में देखा जा सकता है।

समग्र रूप से यही कहा जा सकता है जलवायु परिवर्तन की समस्या के लिए ऐतिहासिक रूप से चाहे विकसित देशों को जिम्मेदार ठहराया चाहे, लेकिन वर्तमान में यह सभी देशों के समक्ष गंभीर चुनौती उत्पन्न कर मानव समुदाय के समक्ष अस्तित्व का प्रश्न उपस्थित कर रही है। अतः बेहतर यही है कि सक्षम एवं विकसित देशों को ज्यादा जिम्मेदारी लेने के साथ विकासशील एवं अन्य पिछड़े देशों को तकनीकी एवं वित्तीय सहारा प्रदान कर संतुलित एवं समावेशी विकास को बढ़ावा देकर इस गंभीर चुनौती से मानवता को बचाया जाये, अन्यथा इससे न केवल विकासशील एवं पिछड़े देशों को भुगतान पड़ेगा, बल्कि विकसित देश भी इससे अछूते नहीं बचेंगे जो कि अमेरिका में शीत लहर के कारण गंभीर क्षति के रूप में देखा जा सकता है। आवश्यकता इस बात है कि ना केवल देश अपितु प्रत्येक व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी समझते हुए उपभोक्तावादी प्रवृत्ति के स्थान पर विकास में प्रकृति के साथ समन्वय बनाते हुए गांधी जी के इस वाक्य को आत्मसात करें 'प्रकृति मनुष्य की सभी आवश्यकताओं को पूरा कर सकती, लालच को नहीं।'

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

खंड–B / SECTION –B

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

1. एक सुखी जीवन प्रकृति से प्रेरित एवं सहजता से संचालित होता है।

   A good life is the one inspired by nature and conducted with ease.

2. व्यावहारिकता आदर्श की पुष्टि करती है।

   Pragmatism affirms the ideal.

3. मूल्यविहीन शिक्षा व्यक्ति को चतुर शैतान बनाती है।

   Education without values makes man a cleverer devil.

4. विकसित होते भारतीय समाज का द्वंद्व।

   Conflicts in developing Indian society.

मूल्यविहीन शिक्षा व्यक्ति को चतुर शैतान बनाती है।

'इस मनुज के हाथ से,
विज्ञान के भी फूल
बन गये शूल
शुभ धर्म अपना भूल।'

जिस कवि की ये पंक्तियाँ मूल्यविहीन विज्ञान के दुष्परिणामों की ओर इंगित कर

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

रही है। कवि के अनुसार जो विज्ञान मनुष्य के जीवन स्तर को उन्नत बनाने के लिए प्रयुक्त होनी चाहिए, उसे मनुष्य ने स्वार्थ से अभिभूत होकर मानव विनाश के लिए अर्थात मौत के रूप में प्रयुक्त करना शुरू कर दिया है।

इस संदर्भ में जब हम मानव सभ्यता के इतिहास पर विचार करते हैं तो यह पाते हैं कि मनुष्य को यूँ ही नहीं प्रकृति के सर्वश्रेष्ठ प्राणी का दर्जा प्राप्त है, बल्कि यह उससे विवेक, ज्ञान के कारण है, जिसके द्वारा मानव प्रकृति में आवश्यक परिवर्तन करते हुए विभिन्न सुविधाओं के विकास के द्वारा अपने जीवन स्तर को उन्नत बनाता जाता है। इसी क्रम में यह प्रकृति के क्रमबद्ध एवं तार्किक अध्ययन के रूप में विज्ञान जैसे विषय मानव जीवन में उपयोग लेना शुरू करता है जो और अंधकार युग से निकलकर पुनर्जागरण एवं प्रबोधन काल में

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

मानव जीवन को ज्ञान अर्थात शिक्षा के आधार उन्नत बनाने का प्रयास करता है। इस ज्ञान के उपयोग के द्वारा मनुष्य औद्योगिक क्रांति, सूचना एवं संचार क्रांति से होते वर्तमान समय में 'चौथी औद्योगिक क्रांति' के माध्यम से मानव जीवन को सुख-सुविधाओं के उच्चतम स्तर पर पहुँचाने की कोशिश कर रहा है।

लेकिन, इसके साथ ही इस मानव ज्ञान/शिक्षा का दूसरा स्याह पक्ष भी सामने आता है। इस ज्ञान-विज्ञान के आधार विकसित प्रौद्योगिकी के आधार पर ही मनुष्य को प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध जैसी विभीषिकाओं का सामना करना पड़ा तथा वर्तमान समय विश्व के समक्ष उत्पन्न गंभीर समस्याओं जैसे जलवायु परिवर्तन, भूमंडलीय ऊष्मण, आतंकवाद, तीव्र सामाजिक एवं आर्थिक विषमता, विभिन्न देशों के मध्य उत्पन्न तनाव, नाभिकीय युद्ध की

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

धमकियाँ, रासायनिक एवं जैविक हथियारों जैसे व्यापक विध्वंस के हथियारों का अनुप्रयोग, जैव विविधता पर बढ़ता संकट, साइबर अपराध आदि यह सवाल खड़ा करते हैं कि क्या शिक्षा / ज्ञान - विज्ञान इसके लिए उत्तरदायी है?

इसी संदर्भ में जब हम शिक्षा और उसके मानव जीवन पर प्रभाव की बात करते हैं तो यह बात आसानी से समझ आ जाती है कि शिक्षा तो एकमात्र साधन है जो व्यक्ति को जीवन और प्रकृति की समझ देती है, उसे अपने जीवन को उन्नत बनाने के लिए संसाधनों का उपयोग करने की कला सिखाती है; तथा साथ ही उसके जीवन में अज्ञान रूपी अंधेरे को हटाते हुए ज्ञान का प्रकाश पैदा कर जीवन को रास्ता दिखाती है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

इस प्रकार शिक्षा एकमात्र हथियार है जो व्यक्ति को उसकी क्षमता से परिचित कराती है। ~~[illegible]~~ इसके पश्चात यह व्यक्ति पर निर्भर करता है कि वह इस क्षमता का उपयोग मानव कल्याण के लिए करता है या चतुर शैतान के रूप में मानव समाज के समक्ष खतरा उत्पन्न करने के लिए।

जब हम इतिहास को उठाकर देखते हैं तो पाते हैं कि इतिहास के महान व्यक्तियों ने उसी स्तर की शिक्षा पायी थी, जिस स्तर पर दुष्ट लोगों ने। लेकिन जहाँ महान व्यक्तियों ने इस शिक्षा का उपयोग करते हुए अपने नैतिक मूल्यों जैसे सहिष्णुता, मानव कल्याण को सर्वोपरि रखा, वहीं दुष्ट व्यक्तियों ने इन नैतिक मूल्यों के रहित अपने ज्ञान का उपयोग मानव समाज में अराजकता एंव भय व्याप्त करने के लिए किया। उदाहरण के लिए महात्मा गाँधी

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

एवं हिटलर दोनों व्यक्तित्वों में इसी बात का अंतर है कि गाँधी जी ने जहाँ अपने ज्ञान को मानव कल्याण, अहिंसा, सर्वधर्म समभाव, सहिष्णुता एवं शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए प्रयुक्त किया, वहीं हिटलर ने न केवल 'जीनोसाइड' किया बल्कि द्वितीय विश्व युद्ध के रूप में मानवता पर एक गहरा घाव छोड़ा। उसकी शिक्षा मूल्यविहीन होने के कारण उसे एक चतुर शैतान का रूप दे दिया जिसने आधुनिक तरीकों एवं प्रौद्योगिकियों का उपयोग यहूदियों के जनसंहार में करने के साथ विश्व युद्ध का मार्ग प्रशस्त किया।

महान व्यक्तित्व जैसे स्वामी विवेकानंद, मार्टिन लूथर किंग, श्री कृष्ण जैसे मिथक सदैव मूल्यों से युक्त शिक्षा का समर्थन किया ताकि इसका उपयोग मानवता के हित में हो सके। इसी के साथ वाल्तेयर, रूसो, मोंटेस्क्यू के चिंतन में भी इसी विचार को देखा जा सकता है जहाँ वे मानव मूल्यों को सर्वोपरि रखते हैं।

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

आज शिक्षा के प्रभाव की बात की जाये तो मनुष्य ज्ञान-विज्ञान के उच्च स्तर पर पहुँच चुका है और निरंतर नये आयामों को छूने की कोशिश कर रहा है। आज ज्ञान-विज्ञान के बल पर ही ~~मनुष्य~~, मनुष्य ने खाद्यान्न उत्पादकता में तीव्र वृद्धि कर पोषण सुरक्षा, बायो प्रौद्योगिकी के माध्यम से स्वास्थ्य क्षेत्र में नित नयी तकनीक, संचार-क्रांति के माध्यम से मानव समुदाय को निकट लाकर 'ग्लोबल विलेज' की अवधारणा को साकार किया है। आज मानव जीवन को और सहज-सरल बनाने के लिए 'इंटरनेट ऑफ थिंग्स', 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' जैसी नयी तकनीकें के समावेशन के प्रयास किये जा रहे हैं।

इस प्रकार इस शिक्षा का उपयोग मानव कल्याण को ध्यान में रखकर करने से मानव जीवन सुखी एवं समृद्ध हो रहा है, लेकिन कहीं-न-कहीं इस भौतिकवादी युग में शिक्षा के उपयोग के।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

मूल्यविहीनता की समस्या मानव समुदाय के समक्ष एक गंभीर चिंता उत्पन्न कर रही है।

आज मानव केन्द्रित विकास के कारण प्रकृति के अंधाधुंध दोहन से पर्यावरण के समक्ष गंभीर संकट उत्पन्न हो गया है और जैव-विविधता के ह्रास के साथ जीव-जंतुओं के समक्ष संकट के साथ ही पारिस्थितिकी असंतुलन के प्राकृतिक आपदाओं के रूप में गंभीर परिणाम देखने को मिल रहे हैं।

यहाँ मूल्यविहीनता के बजाय संकीर्ण मानव मूल्यों को, जिसमें मानव केवल स्वहित (मानवहित) को प्राथमिकता देता है, जिम्मेदार माना जा सकता है। इसी संकीर्णता ने मानव को शोषणपूर्ण सह-अस्तित्व के बजाय उपयोगतावादी दृष्टिकोण से स्वयं की सुख-सुविधाओं के साथ उसके सहचर प्राणियों के खिलाफ उत्पन्न कर दिया है, जो अंततः बाढ़, सुनामी, चक्रवात जैसी प्राकृतिक आपदाओं के रूप में स्वयं मानव अस्तित्व के समक्ष ही गंभीर चुनौती उत्पन्न कर रहा है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

इन सेकीर्ण मूल्य के रूप में धर्मांधता को भी देखा जा सकता है. जिसमें विभिन्न आतंकवादी समूहों द्वारा धर्म (जिहाद) के नाम पर मानवता पर आक्रमण किया जा रहा है। जैसे 'इस्लामिक स्टेट' के खलीफा आदि में इस्लामिक आतंकवाद के रूप में देखा जा सकता है. जो अपने संकीर्ण विचारों से युवाओं को दिग्भ्रमित कर उनके दिमाग को दुष्प्रभावित कर आधुनिक प्रौद्योगिकियों से चतुर शैतान बनाकर मानव कल्याण के समक्ष गंभीर चुनौती उत्पन्न कर रहा है।

यह आतंकवाद की विचारधारा वर्तमान समय में संकीर्ण मूल्यों से युक्त शिक्षा द्वारा चतुर शैतान बनने का एक प्रमुख उदाहरण है।

इसके

इसका एक रूप विभिन्न राष्ट्रों द्वारा अन्य देशों के विरुद्ध छद्म युद्ध के रूप में आतंकवाद का प्रयोग, रासायनिक एवं जैविक हथियारों का प्रयोग,

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

जैविकीय युद्ध की धमकी, साइबर युद्ध, अंतरिक्ष में युद्ध जैसे रूप में देखा जा सकता है।

यहाँ इन प्रौद्योगिकियों का उपयोग मानव हित के लिए किया जाना चाहिए था, वहीं इनका उपयोग अपने देश के संकीर्ण हितों की प्राप्ति करने के क्रम मनुष्यों पर चोट पहुँचाने के लिए किया जा रहा है। इसके उदाहरण के रूप में सीरिया, पाकिस्तान, उत्तरी कोरिया आदि के रूप में देखा जा सकता है। इसके अंतर्गत ही लादेन जैसे कुत्सित शिक्षित आतंकवादियों को रखा जा सकता है जिसे पाकिस्तान का सहारा प्राप्त था। वर्तमान में अलकायदा, जैश-ए-मोहम्मद जैसे संगठन भी इसी श्रेणी में रखे जा सकते हैं।

विज्ञान-प्रौद्योगिकी के इस युग में सोशल मीडिया ने व्यक्तियों के बीच दूरियाँ मिटाने का तो काम किया ही है यहाँ इसने भाव-अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान की है, लेकिन इसके बढ़ते दुरुपयोग जैसे अफवाह को फैलाने, फेक न्यूज, साइबर अपराध,

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

आर्थिक धोखाधड़ी एवं महिलाओं के विरुद्ध अपराधों ने इसकी भूमिका पर सवाल उठाने शुरू कर दिये हैं। जहाँ एक तरफ 'अरब स्प्रिंग' जैसे लोकतांत्रिक आंदोलन में सोशल मीडिया की एक अहम भूमिका रही थी, वहीं इसके दुरुपयोग के रूप में भारत में मुजफ्फरनगर दंगे, जम्मू कश्मीर में आतंकवादियों द्वारा युवाओं को भड़काना आदि के रूप में देखा जा सकता है।

इसके अलावा सोशल मीडिया के बढ़ते उपयोग ने व्यक्ति को आत्मकेन्द्रित बनाते हुए समाज से दूर किया है और इसी अकेलेपन के कारण तनाव, आत्महत्या जैसी प्रवृत्तियाँ बढ़ रही हैं।

आज मिसाइल टेक्नोलॉजी ने जहाँ जहाँ देशों की सीमाओं को सुरक्षित किया वहीं घातक हथियारों के रूप में व्यापक स्तर मानव विनाश का कारण भी बन जाती है। स्पेस प्रौद्योगिकी ने मानव के समक्ष असीम संभावनाओं के द्वार खोले,

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation

जिनमें दूरसंचार, टेली-मेडिसन, टेली-एजुकेशन, आपदा प्रबंधन आदि क्षेत्र में मानव समुदाय को प्रभावी रूप से सक्षम बनाया है, लेकिन इसके साथ ही 'अंतरिक्ष सेना' के गठन के साथ 'अंतरिक्ष युद्ध' का खतरा भी मँडराने लगा है। कई देशों ने जैसे अमेरिका ने इस दिशा में कदम भी बढ़ा दिये हैं।

इस सम्पूर्ण विश्लेषण से यही निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि शिक्षा / ज्ञान मनुष्य के पास एक हथियार / उपकरण के रूप में है, जिसके उपयोग की दिशा मनुष्य के नैतिक मूल्यों से निर्देशित होती है। मूल्यों से युक्त शिक्षा प्राप्त व्यक्ति मानव कल्याण को प्राथमिकता देते हुए सतत एवं समावेशी विकास की ओर अग्रसर होगा। यही बात संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा निर्धारित सतत विकास लक्ष्यों में देखी जा सकती है। हमारी कोशिश यही होनी चाहिए हम ज्ञान एवं विज्ञान में निरंतर प्रगति करें, लेकिन इसे मूल्यों से विहीन ना रखें। महात्मा गाँधी के अनुसार शिक्षा आत्मसाक्षात्कार एवं आत्मविकास का माध्यम होनी चाहिए, ना कि स्वार्थपूर्ण दृष्टिकोण का। इन्हीं रास्तों पर चलकर हम विज्ञान के फूल को काँटा बनने से रोक सकते हैं!

www.drishtiias.com
Contact: 8750187501, 8448485517
Copyright – Drishti The Vision Foundation